



सिकंदराबाद दर्पण

त्रैमासिक ई-पत्रिका (सितंबर-2025 – नवंबर-2025) अंक-VI



राजभाषा विभाग



सिकंदराबाद मंडल

संरक्षक

श्री आर.गोपाल कृष्णन,
मंडल रेल प्रबंधक
एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी



संपादक

श्री एम.के.नागराजु
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी



सहयोग

श्री प्रणय कुमार सिंह,
कनिष्ठ अनुवादक



संपादकीय संपर्क

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी,
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय,
सिकंदराबाद, (द.म.रे),
500003
दूरभाष: 88112
ई.मेल: srascrsc@gmail.com



मंडल रेल प्रबंधक का संदेश



यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि सिकंदराबाद मंडल का राजभाषा विभाग हिंदी में नियमित रूप से “सिकंदराबाद दर्पण” त्रैमासिक ई-पत्रिका का विमोचन कर रहा है।

यह पत्रिका राजभाषा के अतिरिक्त मंडल पर विभिन्न विभागों की गतिविधियों की सूचनाओं का माध्यम है। इस पत्रिका को सुसज्जित करने वाले सभी संपादक मंडल सदस्यों, लेखकों एवं सहयोगियों को उनके सतत प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई देता हूं।

आशा है कि त्रैमासिक ई-पत्रिका का यह अंक आपको प्रेरणा देगा तथा उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने के लिए नई ऊर्जा प्रदान करेगा।

मैं इस पत्रिका की सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित,

(श्री आर. गोपाल कृष्णन)
मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादकीय

संपादक के कलम से



प्रिय रेलकर्मियों,

सिकंदराबाद मंडल द्वारा प्रकाशित “सिकंदराबाद दर्पण” ई-पत्रिका का अगला अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत खुशी हो रही है। हमारा सदैव प्रयास है कि “सिकंदराबाद दर्पण” का प्रत्येक अंक सुधी पाठकों की अपेक्षा व आकांक्षाओं पर खरा उतरे।

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस तथा उसके उपरान्त आयोजित हिंदी सप्ताह हमें यह अवसर प्रदान करते हैं कि हम अपने कार्य-व्यवहार में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग का संकल्प लें। इस अवसर पर राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं, संगोष्ठियों एवं रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, जिनका उद्देश्य कर्मचारियों एवं अधिकारियों में हिंदी के प्रति जागरूकता, रुचि और स्वाभाविक प्रयोग को प्रोत्साहित करना है।

हिंदी दिवस एवं हिंदी सप्ताह के दौरान सभी विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक कार्यक्रमों में सहभागिता की तथा राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में सराहनीय योगदान दिया। इस त्रैमासिक ई-पत्रिका के माध्यम से उन प्रयासों, रचनात्मक अभिव्यक्तियों और उपलब्धियों को साझा किया जा रहा है, जो हमारे कार्यालयीन परिवेश में हिंदी को सशक्त बनाने की दिशा में प्रेरक सिद्ध होंगी।

इस अंक में हमने विभिन्न विषयों पर रोचक लेख, कहानी तथा कविताओं को संकलित कर विशेष रूप से समावेश किया है। साथ ही इसमें राजभाषा के अतिरिक्त सिकंदराबाद मंडल की विभिन्न गतिविधियों की झलकियों को प्रकाशित किया गया है। इससे रेलकर्मियों एवं पाठकों का मनोबल बढ़ेगा एवं पत्रिका को बेहतर बनाने में हमें मदद मिलेगी।

हम अपने रचनाकारों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और आशा करते हैं हमारा यह प्रयास निरंतर जारी रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

श्री एम.के.नागराजु
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/सिकंदराबाद

अनुक्रमणिका

क्र.सं	शीर्षक	लेखक / कवि	पृष्ठ
1	हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा	श्री एम.के.नागराजु, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी सिकंदराबाद	1
2	नव वर्ष का शुभारंभ एवं युवाओं में राष्ट्रीय चेतना का विकास	श्री प्रणय कुमार सिंह कनिष्ठ अनुवादक/ सिकंदराबाद	4
3	ओ मेरी स्वप्न सुंदरी	सी.एच सूर्यनारायण आरएस-II/वमंवाप्र/का/सिकं.	7
4	गजल	जितेन्द्र कुमार, तक -1 वसेइंजी/विद्युत/अनु/का/हैदराबाद	8
5	मन से मन का मेल जहाँ हो निजी स्वार्थ की बातें छोड़ो	अजय कुमार पाण्डेय वरि.यात्री गाड़ी प्रबंधक/सिकंदराबाद	9
6	दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति	अनिकेत कुमार आशुलिपिक/वमंसिवदूइंजी/सिकं.	10
7	बेटी हूं अभिशाप नहीं	दुष्येंद्रजीत टीएम-III / वसेइंजी/का/ सिरपुरकागजनगर	11
8	देश भक्ति गीत	मुकेश कुमार बैरवा तक-I/डीजल लोको शेड/काजीपेट	12
9	ताज वही हूं	लक्ष्मण कुमार तक -1 /वसेइंजी/सवमाडि/बीदर	13
10	सिकंदराबाद मंडल द्वारा आयोजित की गई गतिविधियां		14
11	राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित की गई गतिविधियां		17

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा

© श्री एम.के.नागराजु

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी/सिकंदराबाद

भूमिका

भारत विविधताओं का देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ, बोलियाँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ सहअस्तित्व में हैं। इस भाषायी विविधता के बीच हिंदी वह सेतु है, जो देश के कोने-कोने को जोड़ती है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक संवाद का सशक्त माध्यम है। भारत सरकार द्वारा हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है, ताकि शासन-प्रशासन के कार्य सरल, सुलभ और जनसामान्य के निकट हों। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस तथा 14 से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। यह अवसर न केवल हिंदी के गौरवशाली अतीत का स्मरण कराता है, बल्कि राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रभावी प्रयोग हेतु हमें आत्ममंथन और संकल्प का अवसर भी देता है।

हिंदी दिवस का ऐतिहासिक महत्व

14 सितंबर 1949 का दिन भारतीय भाषायी इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस ऐतिहासिक निर्णय के सम्मान में वर्ष 1953 से प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाने लगा। हिंदी दिवस का उद्देश्य हिंदी के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना, इसके प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करना तथा राजभाषा के रूप में इसके प्रयोग को सुदृढ़ करना है। यह दिन हमें यह स्मरण कराता है कि हिंदी हमारी सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रीय अस्मिता से गहराई से जुड़ी हुई है।

हिंदी पखवाड़ा : उद्देश्य और आवश्यकता

हिंदी दिवस के साथ-साथ हिंदी पखवाड़ा मनाने की परंपरा इसलिए प्रारंभ की गई, ताकि हिंदी के प्रयोग को केवल एक दिन तक सीमित न रखकर निरंतर पंद्रह दिनों तक विविध कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं और गतिविधियों के माध्यम से व्यापक स्तर पर प्रोत्साहित किया जा सके। हिंदी पखवाड़ा का मुख्य उद्देश्य कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना, कर्मचारियों एवं अधिकारियों को राजभाषा के प्रति जागरूक करना तथा हिंदी में कार्य करने के प्रति सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना है।

संवैधानिक प्रावधान और हिंदी

भारत के संविधान के भाग-17 (अनुच्छेद 343 से 351) में राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए हैं। अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी देवनागरी लिपि में भारत संघ की राजभाषा है। साथ ही, अनुच्छेद 351 में हिंदी के विकास हेतु केंद्र सरकार का कर्तव्य निर्धारित किया गया है, जिसके अंतर्गत हिंदी को इस प्रकार विकसित किया जाना है कि वह भारत की सामासिक संस्कृति की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। इन संवैधानिक प्रावधानों का उद्देश्य हिंदी को एक सशक्त, समृद्ध और सर्वमान्य भाषा के रूप में स्थापित करना है।

राजभाषा विभाग की भूमिका

राजभाषा विभाग भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत कार्य करता है। इसका मुख्य उद्देश्य केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों तथा स्वायत्त संस्थाओं में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। राजभाषा विभाग समय-समय पर दिशा-निर्देश, परिपत्र, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा निरीक्षण के माध्यम से यह सुनिश्चित करता है कि राजकीय कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग हो। हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा के आयोजन में राजभाषा विभाग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित गतिविधियाँ

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न कार्यालयों में अनेक रचनात्मक और प्रेरक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इनमें हिंदी निबंध प्रतियोगिता, हिंदी वाद-विवाद, कवि सम्मेलन, प्रश्नोत्तरी, टिप्पण-प्रारूप लेखन, अनुवाद प्रतियोगिता, श्रुतलेख, आशुभाषण आदि प्रमुख हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य कर्मचारियों की हिंदी दक्षता को निखारना तथा हिंदी में कार्य करने के प्रति आत्मविश्वास उत्पन्न करना है।

प्रोत्साहन एवं पुरस्कार योजनाएँ

राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न पुरस्कार एवं प्रोत्साहन योजनाएँ संचालित की जाती हैं। हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्मानित किया जाता है। राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, राजभाषा गौरव पुरस्कार, हिंदी सेवी सम्मान आदि योजनाएँ हिंदी के प्रति सकारात्मक प्रतिस्पर्धा का वातावरण बनाती हैं। इन पुरस्कारों से कर्मचारियों में हिंदी के प्रयोग के प्रति उत्साह और प्रेरणा उत्पन्न होती है।

कार्यालयीन हिंदी : चुनौतियाँ और समाधान

यद्यपि हिंदी भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है, तथापि कार्यालयीन कार्यों में इसके प्रयोग में अनेक चुनौतियाँ सामने आती हैं। तकनीकी शब्दावली की जटिलता, अंग्रेजी के प्रति मानसिक झुकाव, अभ्यास की कमी तथा समयाभाव जैसी समस्याएँ प्रमुख हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु नियमित हिंदी प्रशिक्षण, सरल एवं मानकीकृत शब्दावली का प्रयोग, द्विभाषी सॉफ्टवेयर एवं तकनीकी संसाधनों का उपयोग आवश्यक है।

डिजिटल युग में हिंदी की भूमिका

आज का युग सूचना एवं प्रौद्योगिकी का युग है। इस डिजिटल दौर में हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। यूनिकोड, हिंदी टाइपिंग टूल्स, अनुवाद सॉफ्टवेयर, मोबाइल एप्लिकेशन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने हिंदी के प्रयोग को सरल और व्यापक बना दिया है। राजभाषा विभाग द्वारा ई-ऑफिस, ई-गवर्नेंस और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे प्रशासन और नागरिकों के बीच संवाद और अधिक सशक्त हो सके।

हिंदी और राष्ट्रीय एकता

हिंदी देश की विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य करती है। यह राष्ट्रीय एकता और अखंडता की सशक्त प्रतीक है। हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से यह संदेश दिया जाता है कि हिंदी किसी भाषा पर थोपे जाने का माध्यम नहीं, बल्कि आपसी संवाद और सहयोग की भाषा है।

युवाओं और नई पीढ़ी में हिंदी

किसी भी भाषा का भविष्य उसकी नई पीढ़ी पर निर्भर करता है। आज के युवाओं में हिंदी के प्रति रुचि और गर्व की भावना विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। हिंदी पखवाड़ा के दौरान युवाओं को साहित्य, सृजनात्मक लेखन, नाट्य प्रस्तुति और डिजिटल कंटेंट निर्माण से जोड़कर हिंदी के प्रति आकर्षण बढ़ाया जा सकता है।

हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक विरासत

हिंदी साहित्य हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अमूल्य हिस्सा है। कबीर, तुलसीदास, प्रेमचंद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे साहित्यकारों ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी दिवस एवं पखवाड़ा के अवसर पर इनके साहित्यिक योगदान का स्मरण करना हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है।

प्रशासनिक दक्षता में हिंदी का योगदान

राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रभावी प्रयोग प्रशासनिक दक्षता को बढ़ाता है। जब शासन की भाषा जनसामान्य की भाषा होती है, तो नीतियों और योजनाओं की समझ और क्रियान्वयन अधिक प्रभावी होता है। हिंदी में पत्राचार, टिप्पण और आदेश प्रशासन को पारदर्शी और उत्तरदायी बनाते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में संकल्प

हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा केवल औपचारिक आयोजन नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और संकल्प का अवसर हैं। हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे, हिंदी सीखने और सिखाने के लिए सतत प्रयास करेंगे तथा राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में सक्रिय योगदान देंगे।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा हमें अपनी राजभाषा के प्रति कर्तव्यों का बोध कराते हैं। हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक चेतना की वाहक है। राजभाषा विभाग के मार्गदर्शन में यदि हम सभी मिलकर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें, तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी प्रशासन, प्रौद्योगिकी और वैश्विक मंच पर और अधिक सशक्त रूप में स्थापित होगी। हिंदी के सम्मान, संवर्धन और प्रयोग के लिए निरंतर प्रयास ही हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़ा का सच्चा उद्देश्य है।

नव वर्ष का शुभारंभ एवं युवाओं में राष्ट्रीय चेतना का विकास

© प्रणय कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक, सिकंदराबाद मंडल

प्रस्तावना

नववर्ष का आगमन मानव जीवन में उल्लास, आशा और नवचेतना का संचार करता है। यह केवल वर्ष परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह आत्ममंथन, आत्मसुधार और नवीन संकल्पों के साथ आगे बढ़ने का अवसर भी है। जैसे ही वर्ष का अंतिम दिन विदा लेता है और नया वर्ष दस्तक देता है, मनुष्य बीते हुए समय की स्मृतियों को समेटकर भविष्य की ओर आशावान दृष्टि से देखता है। यही कारण है कि विश्व के लगभग सभी देशों और संस्कृतियों में नए साल का स्वागत हर्षोल्लास, उत्सव और शुभकामनाओं के साथ किया जाता है। भारत जैसे प्राचीन सभ्यता वाले राष्ट्र में नव वर्ष का शुभारंभ केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष महत्व रखता है। विशेषकर युवाओं के संदर्भ में नव वर्ष का संदेश अत्यंत प्रेरणादायी है, क्योंकि युवा शक्ति ही राष्ट्र की दिशा और दशा निर्धारित करती है।

आज का युवा तकनीकी रूप से सक्षम, विचारों में स्वतंत्र और वैश्विक दृष्टि से जुड़ा हुआ है। ऐसे में नव वर्ष का अवसर युवाओं के भीतर राष्ट्रीय चेतना को और अधिक सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम बन सकता है।

नववर्ष का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

नए साल की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। इतिहासकारों के अनुसार, सबसे पहले लगभग 4000 वर्ष पूर्व बेबीलोन सभ्यता में नए वर्ष का उत्सव मनाया गया था। उस समय नया साल वसंत ऋतु के आगमन के साथ मनाया जाता था, क्योंकि कृषि-प्रधान समाज में यह समय नई फसल और नए जीवन का प्रतीक माना जाता था।

रोमन सभ्यता में जनवरी माह को नया साल माना गया, क्योंकि यह महीना जनस देवता (Janus) के नाम पर रखा गया था, जिन्हें द्वार, आरंभ और अंत का देवता माना जाता है। बाद में ईसवी सन् 1582 में ग्रेगोरियन कैलेंडर लागू हुआ, जिसके अनुसार 1 जनवरी को नया साल मनाने की परंपरा विश्वभर में प्रचलित हो गई।

भारत में भी विभिन्न पंचांगों और परंपराओं के अनुसार नए वर्ष की अवधारणा रही है—जैसे विक्रम संवत्, शक संवत्, तमिल नववर्ष, उगादी, बैसाखी, गुड़ी पड़वा आदि। इससे स्पष्ट होता है कि नए साल का प्रारंभ केवल पाश्चात्य परंपरा नहीं, बल्कि मानव सभ्यता की साझा सांस्कृतिक भावना है।

भारतीय संस्कृति में नववर्ष की अवधारणा

भारतीय संस्कृति में नववर्ष की अवधारणा अत्यंत व्यापक और विविधतापूर्ण है। भारत में विभिन्न प्रांतों में भिन्न-भिन्न तिथियों पर नववर्ष मनाया जाता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हिंदू नववर्ष, महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, आंध्र प्रदेश व कर्नाटक में उगादी, पंजाब में बैसाखी, बंगाल में पोइला बोइशाख तथा तमिलनाडु में पुथांडु के रूप में नववर्ष मनाया जाता है। यह विविधता भारतीय संस्कृति की समृद्धि और एकता को दर्शाती है। वैश्वीकरण के प्रभाव से 1 जनवरी का नववर्ष भी भारत में व्यापक रूप से मनाया जाने लगा है, जो आधुनिकता और परंपरा के समन्वय का उदाहरण है।

नववर्ष का महत्व

नववर्ष समाज में आपसी सद्भाव, भाईचारे और सकारात्मकता को बढ़ावा देता है। लोग पुराने मतभेदों को भुलाकर एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं और नए संबंधों की शुरुआत करते हैं। परिवार, मित्र और समाज के विभिन्न वर्ग इस अवसर पर एक-दूसरे के साथ समय बिताते हैं। यह पर्व सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करता है और समाज में नई ऊर्जा का संचार करता है।

व्यक्तिगत स्तर पर नववर्ष आत्मविश्लेषण का श्रेष्ठ अवसर होता है। मनुष्य अपने बीते वर्ष की उपलब्धियों, असफलताओं और अनुभवों का मूल्यांकन करता है। इसी क्रम में वह स्वस्थ जीवनशैली, समय का सदुपयोग, ज्ञानार्जन तथा नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने का नया संकल्प लेता है। यद्यपि संकल्प लेना सरल है, किंतु उन्हें जीवन में उतारना कठिन। अतः आवश्यक है कि संकल्पों को व्यवहारिक बनाकर निरंतर प्रयास किया जाए।

राष्ट्रीय चेतना का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत का स्वतंत्रता संग्राम राष्ट्रीय चेतना का उत्कृष्ट उदाहरण है। उस दौर के युवा—भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, सुभाष चंद्र बोस, राजगुरु और अनगिनत गुमनाम क्रांतिकारी—अपने व्यक्तिगत सुखों को त्याग कर राष्ट्र के लिए समर्पित हो गए। उनकी राष्ट्रीय चेतना केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि कर्मप्रधान थी।

स्वतंत्रता के बाद भी राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वैज्ञानिक, सैनिक, शिक्षक, चिकित्सक, कलाकार और उद्यमी—सभी ने अपने-अपने क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर योगदान दिया है। नव वर्ष का शुभारंभ हमें इन ऐतिहासिक उदाहरणों से प्रेरणा लेकर वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति देता है।

नव वर्ष और संकल्प की संस्कृति

नव वर्ष को संकल्पों का पर्व कहा जा सकता है। लोग इस अवसर पर अपने जीवन में सुधार के लिए संकल्प लेते हैं—स्वास्थ्य, शिक्षा, करियर, संबंध और आत्मविकास के लिए। यदि इन व्यक्तिगत संकल्पों के साथ राष्ट्रीय संकल्प भी जुड़ जाएँ, तो समाज और राष्ट्र के लिए व्यापक सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

युवाओं के लिए नव वर्ष का संकल्प केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं होना चाहिए। उन्हें यह भी सोचना चाहिए कि वे अपने ज्ञान, कौशल और ऊर्जा से राष्ट्र निर्माण में कैसे योगदान दे सकते हैं। स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, डिजिटल साक्षरता, महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता जैसे विषयों पर संकल्प लेकर युवा राष्ट्रीय चेतना को व्यवहार में बदल सकते हैं।

वैश्वीकरण और युवाओं की राष्ट्रीय पहचान

आधुनिक युग में वैश्वीकरण ने युवाओं को विश्व से जोड़ दिया है। शिक्षा, रोजगार, संस्कृति और तकनीक—हर क्षेत्र में वैश्विक प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। यह जुड़ाव अवसरों के द्वार खोलता है, लेकिन इसके साथ राष्ट्रीय पहचान के क्षीण होने का खतरा भी रहता है।

नव वर्ष का अवसर युवाओं को यह आत्ममंथन करने का अवसर देता है कि वे वैश्विक नागरिक बनते हुए भी अपनी राष्ट्रीय पहचान को कैसे सुदृढ़ रखें। भारतीयता केवल पहनावे या खानपान तक सीमित नहीं है; यह मूल्यों,

सहिष्णुता, विविधता में एकता और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में निहित है। इन मूल्यों को अपनाकर युवा वैश्विक मंच पर भारत का गौरव बढ़ा सकते हैं।

मीडिया, तकनीक और युवा चेतना

डिजिटल युग में मीडिया और तकनीक युवाओं के विचारों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सोशल मीडिया, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और डिजिटल कंटेंट के माध्यम से सूचनाएँ तेजी से फैलती हैं। नव वर्ष के अवसर पर सकारात्मक, प्रेरणादायी और राष्ट्रहित से जुड़ा कंटेंट युवाओं में राष्ट्रीय चेतना को जागृत कर सकता है।

हालांकि, डिजिटल माध्यमों पर फैलने वाली भ्रामक सूचनाएँ और नकारात्मक प्रवृत्तियाँ भी चुनौती बनती हैं। इसलिए युवाओं में डिजिटल साक्षरता और विवेकपूर्ण सोच का विकास आवश्यक है। नव वर्ष का संकल्प होना चाहिए कि तकनीक का उपयोग राष्ट्र निर्माण, ज्ञानवर्धन और सामाजिक समरसता के लिए किया जाए।

चुनौतियाँ और समाधान

युवाओं में राष्ट्रीय चेतना के विकास के मार्ग में कई चुनौतियाँ हैं—उपभोक्तावाद, व्यक्तिगत स्वार्थ, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता और वैचारिक भ्रम। नव वर्ष का शुभारंभ इन चुनौतियों पर गंभीरता से विचार करने और समाधान खोजने का अवसर प्रदान करता है।

समाधान के रूप में समावेशी विकास, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, रोजगार के अवसर, नैतिक नेतृत्व और पारदर्शी शासन आवश्यक हैं। युवाओं को निर्णय प्रक्रिया में शामिल करना और उनकी रचनात्मक ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देना राष्ट्रीय चेतना को मजबूत करता है।

निष्कर्ष

नव वर्ष का शुभारंभ आशा, ऊर्जा और नवचेतना का प्रतीक है। यह समय युवाओं के लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि राष्ट्र का भविष्य उनके विचारों, कर्मों और मूल्यों पर निर्भर करता है। यदि नव वर्ष के साथ युवा वर्ग अपने भीतर राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक मूल्यों को जागृत करने का संकल्प ले, तो देश की प्रगति सुनिश्चित की जा सकती है।

राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत युवा न केवल अपने व्यक्तिगत विकास की ओर अग्रसर होते हैं, बल्कि राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानकर कार्य करते हैं। जब युवाओं में देशप्रेम, एकता, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा भाव का विकास होता है, तब वे सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष कर सकते हैं और एक सशक्त, समृद्ध एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दे सकते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि नव वर्ष का शुभारंभ युवाओं में राष्ट्रीय चेतना के विकास का सशक्त माध्यम बन सकता है। यदि युवा इस अवसर को सकारात्मक सोच, रचनात्मक कार्यों और राष्ट्रसेवा के संकल्प के साथ अपनाएँ, तो भारत न केवल वर्तमान चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक करेगा, बल्कि विश्व पटल पर एक आदर्श राष्ट्र के रूप में स्थापित होगा।

ओ मेरी स्वप्न सुंदरी

सीएच.सूर्यनारायण

आरएस-II/वमंवाप्र/का/सिकंदराबाद

ओ मेरी स्वप्न सुंदरी
कहां हो ओ मनोहरी
मेरे जिंदगी में आओ बनकर सुर झरी
मेरे गृह की तुलसी की मंजरी

तेरे अधरों की दरहास भास
कर देती है मेरे हृदय कुसुम को विकास
बना लो मुझको अपने दास
नहीं तो मैं बन जाऊंगा देवदास
तेरा नाम जपती है मेरे हर श्वास
मुझको पूरा है विश्वास
एक दिन तुम रहोगी मेरे पास

तुमने किया मेरे मन की हरण
करता रहता हूं तेरा ही स्मरण
तुम ही हो मेरे आशाओं की किरण
पायल बनकर स्पर्श करना चाहता तेरा चरण

मैं जानता तक नहीं तेरा नाम
स्वप्नों में ही होता है तेरा दर्शन

कब होगा तेरा दर्शन
कब होगा हमारा मिलन

गजल

जितेन्द्र कुमार, तकनीशियन-1
वसेइंजी/विद्युत/अनु/हैदराबाद

इस जहां में पैर जमाने कौन आता है
खुद गिरकर उठते हैं, उठाने कौन आता है

नफ़रतों के शोले बरस रहे हैं हर घर से
बस्ती में आग भला, बुझाने कौन आता है

गिरे हैं फ्लैट, झोपड़ियां सभी एक ही जगह
मगर मलवे मज़लूमों के, हटाने कौन आता है

लगे जब दाग़ दामन पर ग़रीबी का जितेन्द्र
देखने सब आए, मिटाने कौन आता है

पैदा हो भगत सिंह मगर घर दूसरा हो
ऐसे को घर अपने, बुलाने कौन आता है

मंझे हुए इस क़त्ल के सब मदारी हैं यहां
भेद अपने मज़मे का, बताने कौन आता है

मन से मन का मेल जहाँ हो निजी स्वार्थ की बातें छोड़ो

© अजय कुमार पाण्डेय

मेल एक्सप्रेस गाड़ी प्रबंधक/सिकंदराबाद

मन से मन का मेल जहाँ हो निजी स्वार्थ की बातें छोड़ो,
इक दूजे के मन को पढ़ लो विश्वास हृदय का मत तोड़ो,
मन से मन का मेल जहाँ हो निजी स्वार्थ की बातें छोड़ो।

रिश्तों में नहीं स्वार्थ रहे और रहे नहीं सौदेबाजी,
एक दूजे का साथ रहे और रहे हमेशा मन राजी।
भाव किसी के मन में उपजे दूजे का मन उसको पढ़ ले,
नयनों के झुकने से पहले उनकी भाषा को मन पढ़ ले।

नयनों की भाषा को पढ़ लो आस नयन के मत तोड़ो,
मन से मन का मेल जहाँ हो निजी स्वार्थ की बातें छोड़ो।

क्या लाये थे इस जीवन में और साथ क्या ले जाओगे,
जो कुछ दोगे यहाँ जगत को वही जगत से तुम पाओगे।
धन दौलत ये महल दुमहले ये सारे इक आडंबर है,
अपने भीतर झाँको देखो सच्चा सुख मन के अंदर है।

मन की दौलत बहुत बड़ी है मत इनसे तुम नाता तोड़ो,
मन से मन का मेल जहाँ हो निजी स्वार्थ की बातें छोड़ो।

पुण्य पंथ है जीवन पथ ये और पथिक मन इस जीवन का,
दूर क्षितिज तक वो महकेगा जिसका तन मन धन चंदन का।
झूठे आडंबर से बच जो मर्म हृदय का पढ़ पायेगा,
काल खंड के ताम्र पत्र पर वही गीत नव गढ़ पायेगा।

पुण्य पथिक हो पुण्य पंथ के पुण्य प्रेम का पथ मत छोड़ो,
मन से मन का मेल जहाँ हो निजी स्वार्थ की बातें छोड़ो।

दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति

अनिकेत कुमार
आशुलिपिक/वमंसिवदूइंजी/सिकं.

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

• स्वतंत्रता आंदोलन के समय: हिंदी को राष्ट्रीय एकता की भाषा के रूप में देखा गया, लेकिन दक्षिण भारत में इसे "थोपे जाने" का डर रहा। तमिलनाडु में विरोध: 1937 और 1965 में हिंदी विरोधी आंदोलन हुए, जिनका असर आज भी दिखाई देता है। अन्य राज्यों में स्थिति: कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और केरल में विरोध उतना तीव्र नहीं रहा, लेकिन स्थानीय भाषाओं की प्रधानता हमेशा बनी रही।

2. शिक्षा और प्रशासन

विद्यालयों में: हिंदी वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। CBSE और केंद्रीय विद्यालयों में हिंदी अनिवार्य है, जबकि राज्य बोर्डों में विकल्प के रूप में। विश्वविद्यालयों में: कई विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग हैं, जैसे मद्रास विश्वविद्यालय, मैसूर विश्वविद्यालय। प्रशासनिक प्रयोग: केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग होता है, लेकिन राज्य सरकारें स्थानीय भाषाओं को प्राथमिकता देती हैं।

3. सांस्कृतिक प्रभाव

सिनेमा और मनोरंजन: बॉलीवुड फिल्मों और गानों ने हिंदी को लोकप्रिय बनाया। दक्षिण भारत के युवा हिंदी गानों और फिल्मों से जुड़ते हैं। टीवी और सोशल मीडिया: हिंदी धारावाहिक और यूट्यूब चैनल दक्षिण भारत में भी देखे जाते हैं। साहित्य: हिंदी दिवस, कवि सम्मेलन और साहित्यिक गोष्ठियाँ दक्षिण भारत में आयोजित होती हैं।

4. सामाजिक और व्यावहारिक उपयोग

प्रवासी समुदाय: उत्तर भारत से आए लोग हिंदी बोलते हैं, जिससे स्थानीय स्तर पर हिंदी का प्रयोग बढ़ता है। व्यापार और पर्यटन: हिंदी पर्यटकों और व्यापारिक संवाद में उपयोगी है। युवा वर्ग: शिक्षा और मनोरंजन के कारण हिंदी समझने वाले युवाओं की संख्या बढ़ रही है।

निष्कर्ष

दक्षिण भारत में हिंदी का स्थान पूरक भाषा का है। यह प्रमुख भाषा नहीं है, लेकिन समझने और सीखने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। हिंदी का भविष्य यहाँ सांस्कृतिक आदान-प्रदान, शिक्षा और रोजगार पर निर्भर है। स्थानीय भाषाओं का सम्मान करते हुए हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अपनाना ही संतुलित रास्ता है।

बेटी हूं अभिशाप नहीं

दुष्येंद्रजीत, टीएम-III / सिरपुरकागजनगर

थमती सांसे धड़कन रुकती, कोख मिली पर जनम नहीं.

मत मारो मुझको भी जीने दो, बेटी हूं अभिशाप नहीं.

था तिमिर गर्भ में जननी के, देखा तनिक प्रकाश नहीं.

न देख सकी दुनिया दारी, न डोर किसी से बांध सकी.

न बनी पूत मैं बनी सुता इसमें तो मेरी भूल नहीं.

मत मारो मुझको भी जीने दो, बेटी हूं अभिशाप नहीं.

अपने जीवन का भूत देख, उस मां ने क्या तू जनी.

बन गई कोख शमशान तेरी मां, उससे पहले क्यूं मरी नहीं.

क्या हृदय नहीं था सीने में, या ममता हो गई लोप कहीं.

मत मारो मुझको भी जीने दो बेटी हूं अभिशाप नहीं.

देश भक्ति गीत

मुकेश कुमार बैरवा

तकनीशियन/ डीजल लोको शेड/ काजीपेट

जरा शान पे इसकी हो... हो
चल तान के सीना हो... हो
ओ यार मेरे तू हिंद के नाज उठा ले
अरे धरती की गोद में भाई रे
धरती की गोद में.....
सुन ले कि जिसने जिंदगी लुटाई अपने देश पे
वह लालबहादुर है, गांधी है, नेहरू है
सुन ले कि अपना मजहब ही प्यार है जहान है
कि हम सब एक हैं
एक हैं एक हैं ये रिश्ते नाते हो... हो
अरे जन्म... जन्म के हो... हो
ओ साथी रे तू अपने ख्वाब सजा ले
अरे धरती की गोद में...

इक बाग है ये दुनिया वो ईश्वर माली है
एक फूल है हर इमान हर मजहब डाली है-2

ज्यू बाग में हसते है कई रंग के नजारे
दुनिया में यूँ बसते हैं कई देश शहर प्यारे
इस बाग में दुनिया के हमसे हरियाली है

पर आज वही दुनिया वही बाग है सहमा सा
हर शख्स है घबरायाँ हर फूल है कुम्हलाया
आखों में है नफरत क्यूँ दिल प्यार से खाली है

बारूद की देरी पर हर इंसा है बैठा क्यूँ
एटम के ही दमखम पर हर देश है ऐठा क्यूँ
क्यूँ अमन के चहरे पर यह जंग की लाली है

ताज वही हूँ

लक्ष्मण कुमार
तक- 1/वसेइंजी/सवमाडि/बीदर

मन के रंग में रंग गया
मै राग वहीं हूँ,
धर्मवीर मै क्रांति का
सूखे ओठों का रास वहीं हूँ
हां, मै ताज वही हूँ।

धर्म नीति है गदा मेरी
अनुराग की चाह रखी,
रागों का व्यापार करने
उन दलालों का सरदार वही हूँ
हां, मै ताज वही हूँ।

तबले की ताल तले
सुमधुर बहार वही हूँ,
आंसुओं का धार बन
प्रेम का दीवान वही हूँ
हां, मै ताज वही हूँ।

सुरों का तिलक बन
उनका प्रज्ञा-पुराण वही हूँ,
कनक का कंगन बन
तेरे यौवन का तार वही हूँ
हां, मै ताज वही हूँ।

सदाबहार वनों का श्रृंगार मै
रागिनी बहार वही हूँ,
पलकों पर आस लिए
मन में प्रेमी का प्यास वही हूँ
हां, मै ताज वही हूँ।

सिकंदराबाद मंडल द्वारा आयोजित की गई गतिविधियां

मंचिर्याल और सिरपुर-कागजनगर स्टेशन पर अतिरिक्त ठहराव के प्रावधान के साथ गाड़ी संख्या

20101/20102 नागपुर-सिकंदराबाद-नागपुर बंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया.

नागपुर-सिकंदराबाद-नागपुर बंदे भारत एक्सप्रेस (गाड़ी सं. 20101/20102) को दो अलग-अलग मौकों पर हरी झंडी दिखाई गई; दिनांक 15.09.25 को मंचिर्याल रेलवे स्टेशन पर माननीय गृह राज्य मंत्री श्री बंदी संजय ने और 18.09.25 को सिरपुर-कागजनगर में माननीय सांसद श्री गोदाम नागेश गारू ने दोनों इवेंट में राज्य के बड़े लोग और रेलवे के बड़े अधिकारी शामिल हुए.



मंडल कार्यालय में स्वच्छता ही सेवा अभियान कार्यक्रम

मंडल ने 17 सितंबर से 2 अक्टूबर, 2025 तक 'स्वच्छता ही सेवा' सफाई अभियान मनाया, ताकि 'स्वच्छोत्सव' थीम के साथ स्वच्छ भारत मिशन को लॉन्च किया जा सके. दिनांक 17.09.2025 को, संचालन भवन में अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई, जिससे स्वच्छ और स्वस्थ भारत के लिए समर्पित स्वच्छ भारत मिशन के प्रति प्रतिबद्धता की पुष्टि हुई और दिनांक 19.09.25 को संचालन भवन में लोगों और कर्मचारियों के बीच जागरूकता फैलाने और स्वच्छ भारत मिशन को बढ़ावा देने के लिए वाकथॉन भी किया.



“स्वच्छ भारत का सपना तभी साकार होगा, जब हर नागरिक इसमें अपनी भागीदारी निभाएगा.”

:- नरेंद्र मोदी

सिकंदराबाद स्टेशन में स्वच्छता ही सेवा समापन समारोह अभियान

मंडल रेल प्रबंधक/ सिकंदराबाद ने अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ सिकंदराबाद स्टेशन के प्लेटफार्म सं. 10 पर 'स्वच्छता ही सेवा' समापन समारोह का आयोजन किया गया. मंडल रेल प्रबंधक महोदय के द्वारा अधिकारियों और कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई. इसके अतिरिक्त स्वच्छता जागरूकता पर सांस्कृतिक कार्यक्रम देखे, इस दौरान विभिन्न स्टेशनों पर स्वच्छता जागरूकता पर उनके प्रभावशाली नाटकों के लिए नुक्कड़ नाटक टीम को प्रशंसा पत्र दिए और स्कूल और कॉलेज के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए, खेल के विजेताओं को स्मृति चिह्न दिए, जिन्होंने स्वच्छ भारत मिशन पर ड्राइंग, पेंटिंग, खेल और निबंध लेखन में भाग लिया.



बीदर स्टेशन पर पार्सल कार्यालय का उद्घाटन

मंरेप्र/सिकंदराबाद ने 23 सितंबर, 2025 को बीदर रेलवे स्टेशन पर नए पार्सल ऑफिस का उद्घाटन किया. इसका मकसद लॉजिस्टिक्स, पार्सल हैंडलिंग और रेवेन्यू जेनरेशन को बेहतर बनाना है, साथ ही ग्राहक और स्थानीय व्यवसाय को भी फायदा पहुंचाना है.



सुविचार

- ❖ "जहाँ स्वच्छता है, वहीं स्वस्थ जीवन और उज्ज्वल भविष्य है"
- ❖ "कूड़ा फैलाना नहीं, स्वच्छता अपनाना ही सच्ची देशभक्ति है"
- ❖ "स्वच्छता से संस्कार बनते हैं और संस्कार से सशक्त राष्ट्र"
- ❖ "आज की स्वच्छता, कल की सुरक्षा है"
- ❖ "एक कदम स्वच्छता की ओर, सौ कदम प्रगति की ओर"
- ❖ "स्वच्छता ही सेवा है, और सेवा ही सच्चा मानव धर्म"

स्वच्छ रेल स्वच्छ भारत- 'स्वच्छता-पखवाड़ा' पर विशेष अभियान

सिकंदराबाद मंडल ने स्वच्छ भारत मिशन की 11वीं वर्षगांठ 1 से 15 अक्टूबर 2025 तक “स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत – स्वच्छता पखवाड़ा” के रूप में मनाया जिसकी थीम ‘स्वच्छोत्सव’ थी. मंडल ने 1 से 31 अक्टूबर 2025 तक विशेष अभियान 5.0 भी चलाया. इस अभियान के दौरान, पूरी जांच और निरीक्षण किए गए, और पूरे मंडल में रेलवे स्टेशनों, कॉलोनिंग, ट्रेनों, रनिंग रूम, वर्कशॉप, डिपो, लोको शेड, कार्यालय, हॉस्पिटल/स्वास्थ्य यूनिट और दूसरी रेलवे जगहों पर स्वच्छता शपथ, श्रमदान, स्वच्छ भारत दिवस, स्वच्छ परिसर, स्वच्छ नीर, वॉकथॉन, स्वच्छता पर जागरूकता रैली, प्लास्टिक कचरे पर जागरूकता अभियान और सिंगल-यूज प्लास्टिक पर बैन, नुक्कड़ नाटक इत्यादि जैसे कई कार्यक्रम और गतिविधियां आयोजित की गईं.



इसके अतिरिक्त, महाप्रबंधक/द.म.रे और मंडल रेल प्रबंधक/ सिकंदराबाद ने बेगमपेट और सिकंदराबाद स्टेशनों पर “अमृत संवाद” पैसेंजर इंटरैक्शन सेशन को लीड किया. यात्रियों ने वार्तालाप के दौरान अपने फीडबैक और सुझाव दिए. सस्टेनेबिलिटी को बढ़ावा देने के लिए, प्लास्टिक मुक्त वातावरण को बढ़ावा देने के लिए इको-फ्रेंडली जूट बैग बांटे गए.

सतर्कता जागरूकता सप्ताह और "राष्ट्रीय एकता दिवस" का आयोजन



डॉ. आर. गोपालकृष्णन, मंडल रेल प्रबंधक/सिकंदराबाद, ने संचालन भवन के अधिकारियों और कर्मचारियों को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के हिस्से के रूप में "राष्ट्रीय एकता दिवस" की शपथ और सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई और सत्यनिष्ठा और राष्ट्रीय एकता के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए एक इंटीग्रेटी वॉकथॉन में भी भाग लिया. सतर्कता जागरूकता सप्ताह पर एक सेमिनार भी आयोजित किया गया.



राजभाषा विभाग, सिकंदराबाद मंडल द्वारा आयोजित गतिविधियां

दि.12.09.2025 को हैदराबाद स्टेशन में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन

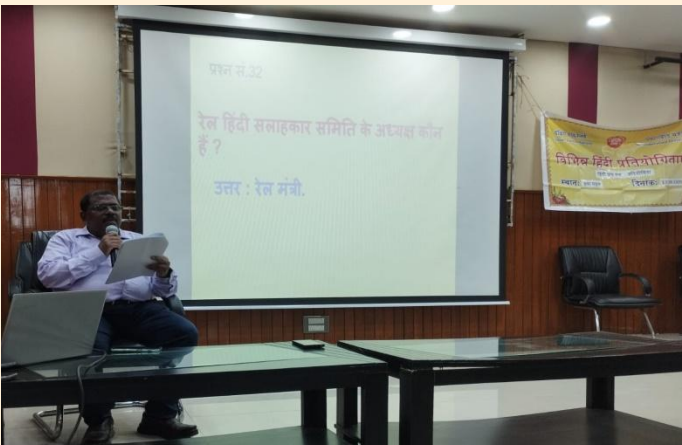


राजभाषा सप्ताह के दौरान सिकंदराबाद मंडल में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिनांक 16.09.2025 को सिकंदराबाद मंडल कार्यालय के विभिन्न विभागों के कर्मचारियों द्वारा श्रुत लेखन एवं हिंदी टंकण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए.



दिनांक 17.09.2025 को हवा महल, संचालन भवन में विभिन्न विभागों के कर्मचारियों द्वारा प्रश्न मंच प्रतियोगिता में भाग लेते हुए.



दिनांक 17.09.2025 को हवा महल, संचालन भवन में आयोजित प्रश्न मंच प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कर्मचारियों को वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी के द्वारा पुरस्कृत करते हुए.



दिनांक 18.09.2025 को हवा महल, संचालन भवन में कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन.



दिनांक 19.09.2025 को सभा भवन, संचालन भवन में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 185वीं बैठक का आयोजन



दिनांक 19.09.2025 को सभा भवन, संचालन भवन में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति 185वीं बैठक के दौरान मंडल रेल प्रबंधक महोदय के द्वारा हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले अधिकारियों को सम्मानित करते हुए.



हिंदी में डिक्टेशन देने वाले अधिकारियों को देय पुरस्कार:- इस योजना के अंतर्गत हिंदी में डिक्टेशन देने वाले एक हिंदी भाषी और एक हिंदीतर भाषी रेल अधिकारी को प्रतिवर्ष निम्नानुसार नकद पुरस्कार दिए जाते हैं.

हिंदी डिक्टेशन पुरस्कार
क एवं ख क्षेत्र
ग क्षेत्र

शब्द सीमा
20,000
10,000

राशि
5,000/-
5,000/-

दिनांक 19.09.2025 को सभा भवन, संचालन भवन में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान मंडल रेल प्रबंधक महोदय के द्वारा मंडल स्तरीय हिंदी प्रतियोगिता में भाग लेने वाले कर्मचारियों को सम्मानित करते हुए.



दि. 23.09.2025 को राजभाषा अनुभाग में रामधारी सिंह 'दिनकर' जयंती का आयोजन तथा जयंती पर व्याख्यान देने वाले कर्मचारियों को वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी के द्वारा सम्मानित करते हुए.



दि. 30.10.2025 को विद्युत लोको शेड/ लालागुडा में राजभाषा कार्यान्वयन उप समिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी कार्यशाला का आयोजन.



दि. 13.11.2025 को सिकंदराबाद स्टेशन में राजभाषा कार्यान्वयन उप समिति की तिमाही बैठक एवं हिंदी में तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन तथा हिंदी में व्याख्यान देने वाले कर्मचारियों को वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी द्वारा सम्मानित करते हुए



रेल यात्रा वृत्तांत पुरस्कार:- भारतीय रेल मंत्रालय(रेलवे बोर्ड) द्वारा आयोजित एक वार्षिक प्रतियोगिता है जिसमे आम नागरिक अपनी यादगार रेल यात्रा के अनुभवों को हिंदी में मौलिक लेख के रूप में लिखकर नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र जीत सकते है. इसमें कुल शब्दों की सीमा 3000 से 3500 तक है. प्रथम पुरस्कार के लिए ₹10000/- द्वितीय पुरस्कार के लिए ₹8000/- तृतीय पुरस्कार के लिए ₹6000/- तथा पांच प्रेरणा पुरस्कार के लिए ₹4000/- दिए जाते हैं.

दि. 17.11.2025 को रेल निलयम में आयोजित क्षेत्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता में सिकंदराबाद मंडल के नाटक मंडली द्वारा नाटक का अभिनय करते हुए.



दि. 18.11.2025 को रेल निलयम में 'क्षेत्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता' पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन तथा श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, महाप्रबंधक / द.म.रे द्वारा सिकंदराबाद मंडल के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए.



अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव पुरस्कार:- भारतीय रेलवे द्वारा रेल कर्मचारियों में हिंदी भाषा और रंगमंच के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए आयोजित एक वार्षिक प्रतियोगिता है, जिसमें विभिन्न श्रेणियों जैसे सर्वश्रेष्ठ नाटक, निर्देशन, अभिनय और संगीत के लिए नकद राशि, ट्रॉफी और स्मृति चिह्न दिए जाते हैं और क्षेत्रीय स्तर पर जीतने वाले नाटक अखिल रेल स्तर पर प्रतिनिधित्व करते हैं. इसमें निम्नलिखित रूप से पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं.

- प्रथम पुरस्कार:- रनिंग ट्रॉफी+5000/- रु. नकद पुरस्कार + प्रमाण पत्र
- द्वितीय पुरस्कार:- रनिंग ट्रॉफी+4000/- रु. नकद पुरस्कार + प्रमाण पत्र
- तृतीय पुरस्कार:- रनिंग ट्रॉफी+3000/- रु. नकद पुरस्कार + प्रमाण पत्र
- विभिन्न विधाओं में चुने गए सर्वश्रेष्ठ 15 कलाकारों को पुरस्कृत किया जाता है: नकद पुरस्कार 1000/-रु प्रत्येक को + स्मृति चिह्न

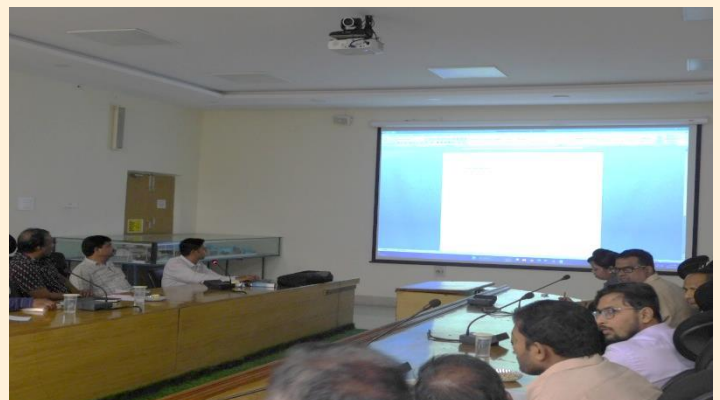
दि. 12.09.2025 को वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी द्वारा हैदराबाद स्टेशन का निरीक्षण करते हुए.



दि. 13.11.2025 को वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी द्वारा सिकंदराबाद स्टेशन का निरीक्षण करते हुए



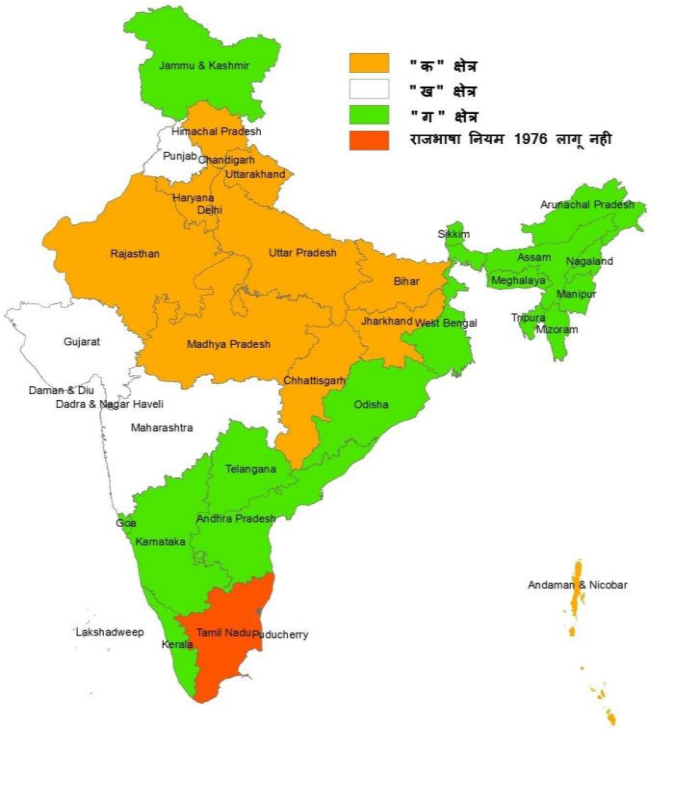
मंडल कार्यालय एवं स्टेशनों पर कर्मचारियों को कुंजीयन प्रशिक्षण देते हुए



राजभाषा नियम

राजभाषा नियम- 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा क, ख, ग में परिभाषित किया गया है.

	भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ क्षेत्र
	‘क’	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह दिल्ली संघ राज्य हैं
	‘ख’	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादर और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र.
	‘ग’	ओडिसा, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, असम, बंगाल, गोवा, तमिलनाडु, मिजोरम, त्रिपुरा, सिक्किम, मणिपुर, तेलंगाना, जम्मू व काश्मीर, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और पांडिचेरी.

➤ राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) के अंतर्गत आने वाले कागजातों की सूची जिनको हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में जारी करना अनिवार्य है.



आइए हिंदी सीखें

सामान्य आदेश	परमिट	उपर्युक्त	Above said
सूचनाएं (आरक्षण चार्ट सहित)	टेंडर फार्म और नोटिस	आरोप पत्र	Charge sheet
अधिसूचनाएं	संकल्प	सहमति	Concurrence
प्रेस विज्ञापितियां/प्रेस नोट/	नियम	विभागीय कार्रवाई	Departmental action
संविदाएं	संसद में प्रस्तुत सरकारी प्रलेखकागजात/	दोहरा प्रभार	Dual charge
करार	संसद में प्रस्तुत प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट	पखवाड़ा	Fortnight
लाइसेंस	---	राजपत्रित	Gazetted

“राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है” - महात्मा गांधी

“यह समाचार पत्रिका सिकंदराबाद मंडल की गतिविधियों को राजभाषा में साझा करने हेतु प्रकाशित की जा रही है”